ऐलफर्ड तायर माहन का सागरीय शक्ति का सिद्धान्त
(Alfred Thayer Mahan's Sea Power Principle)

माहन ने यह मत दिया कि राष्ट्रीय शक्ति और राष्ट्रीय महानता सदैव सागर से जुड़ी होती है। शान्ति के समय में राष्ट्रीय सागर का प्रयोग वाणिज्यिक हितों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करता है और युद्ध के समय राज्य अपनी नियन्त्रण शक्ति बढ़ाने के लिए इसका प्रयोग करता है। इतिहास यह दिखाता है कि जिस देश का नियन्त्रण सागरों पर था, वही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में एक शक्तिशाली देश के रूप में भूमिका निभा सका था। माहन के प्रभाव अधीन कुछ अन्य भू–राजनीतिक वैज्ञानिकों ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सागरीय शक्ति के महत्त्व को प्रकट किया और इस सम्बन्ध में छः भूगोलिक तत्त्वों की महत्त्वपूर्ण भूमिक़ा को प्रकट किया।

1. लाभकारी भौगोलिक स्थिति (Advantageous Geographical Position)।
2. सागरीय तट की सेवा योग्य स्थिति, प्राकृतिक स्रोतों की समृद्ध स्थिति और सहायक जलवायु।
3. भू–क्षेत्र का क्षेत्र।
4. भू–क्षेत्र की सुरक्षा के लिए अनिवार्य जनसंख्या का अस्तित्व।
5. सागरीय और वाणिज्यित उद्यम के लिए सामाजिक वृति (Social aptitude for the sea & commercial enterprise)
6. सागर पर प्रभावशाली स्थिति बनाने के पक्ष वाली सरकार।

इन छः भौगोलिक तत्त्वों के आधार पर किसी भी राष्ट्र की सागरीय शक्ति विश्लेषित की जा सकती है और फिर इसके आधार पर उस देश की राष्ट्रीय शक्ति को विश्लेषित किया जा सकता है। इसी तरह माहन ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सागरीय शक्ति पर आधारित राष्ट्रीय शक्ति के सिद्धान्त की व्यापक पैरवी की।

भू–राजनीति में मकिंडर का हार्ट लैंड सिद्धान्त
(Mackinder and his Heartland Theory in Geo-Poltics)

इंग्लैंड में भू–राजनीतिक दृष्टिकोण सर हैफोर्ड मकिंडर (Sir Halford Mackinder) की रचनाओं और विचारों के कारण बहुत लोकप्रिय हुआ। मकिंडर ने अपने एक लेख 'The Geographical Pivot of History' में अपने हार्टलैंड सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। इस सिद्धान्त में उसने अलफर्ड माहन के विरुद्ध (जिस ने समुद्री शक्ति के तत्त्व पर बल दिया था) यह मत दिया कि सबसे अधिक महत्त्व ज़मीनी शक्ति (Land Power) का था।

मकिंडर ने अपने सिद्धान्त में धरती (Earth) को दो भागों में बांटा : *(i)* विश्व महाद्वीप अथवा केन्द्र (World Island or Core) इसमें उस ने यूरेशिया और अफ्रीका को शामिल किया, और *(ii)* दूसरे भू–क्षेत्रों के घेरे के द्वीप (Peripheral Islands) कहा और इनमें अमरीका, आस्ट्रेलिया, जापान, ब्रिटेन और ओसीआनां (Oceania) भू–द्वीपों को शामिल किया। उस ने यह मत दिया कि हार्टलैंड अथवा कोर अथवा वर्ल्ड महाद्वीप की सागरीय परिवहन व्यवस्था का वास्तविक प्रयोग कर सकता था क्योंकि इसके पास भारी मात्रा में प्राकृतिक स्रोत थे और इसमें एक विकसित अर्थ–व्यवस्था बनने की योग्यता थी। वर्ल्ड महाद्वीप की तुलना में घेरे के द्वीपों की ज़मीन शक्ति और स्रोत कम थे। फिर घेरे के द्वीपों की भौगोलिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी क्योंकि यह अलग–अलग भू–क्षेत्रों में बिखरे हुए थे। इसके विपरीत हार्टलैंड का क्षेत्र जिसमें पश्चिमी यूरोप, उक्रेन, पश्चिमी रूस और मध्य यूरोप आता था, वह अधिक ज़मीन क्षेत्रों तथा शक्तियों के स्वामी थे। मकिंडर ने अपने भू–राजनीतिक अध्यन के आधार पर यह मत दिया कि जो भी पूर्वी यूरोप पर शासन करेगा वही हार्टलैंड पर शासन करेगा और जो भी हार्डलैंड पर शासन करेगा वह विश्व महाद्वीप को कमांड करेगा और जो विश्व महाद्वीप को कमांड करेगा वही विश्व को कमांड करेगा। (Who rules East Europe, commands the Heartland. Who rules Heartland commands the World Island. Who rules the World Island commands the World.) मकिंडर ने यह सिद्धान्त विश्व–युद्ध के समय जर्मनी और शीत–युद्ध के समय महाशक्तियों के ध्यान का एक केन्द्र बना रहा। रूस ने सदैव यह प्रयास किया कि वह हार्डलैंड के क्षेत्र में अपनी शक्ति का विस्तार करे।